संसार में रहें एक योगी की तरह...

संसार में रहना और उससे अलिप्त रहना, ये एक चैलेंज है। संसार में भी रहें और कीचड़ भी न लगे माना किसी के प्रभाव, लगाव और किसी के भी स्वभाव का हमपर असर न हो। ऐसा जीवन हो सकता है? कइयों को लगता है कि ये असंभव बात है, मुश्किल है। लेकिन हाँ, जीवन जीने के दो तरीके हैं, योगी जीवन और भोगी जीवन। 'भोगना' का मतलब ही है 'सफरिंग'। 'योगी' का मतलब है 'डिटैच'। इसलिए योगी को कमल पुष्प के ऊपर दिखाया जाता है। जीवन में दुनिया में रहना है, इसका मतलब कीचड़ है, कीचड़ का मतलब चैलेंज है, बातें हैं, अलग-अलग तरह के वायब्रेशन्स हैं, सिचुएशन्स हैं, लोग हैं, सबकुछ है, उसको छोड़ना तो नहीं है ना! उसको छोड़ना नहीं है और उसे भोगना भी नहीं है। उससे दूर जाना नहीं है लेकिन उसके बीच में रहते हुए उस कीचड़ का चिन्ह हमारे ऊपर नहीं आना चाहिए।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

जैसे सफेद ड्रेस पहनकर बाहर चलते हैं, उस बीच हम ध्यान रखते हैं ना कि कीचड़ हमारे ऊपर न लग जाये। कभी बारिश हो रही है, कभी रास्ते में बहुत कीचड़ है, लेकिन जब हम चलते हैं तो हम किनारा करते हुए, अपने को बचाते हुए चलते हैं ना! उसी तरह हमें संसार में रहकर क्या-क्या ध्यान रखना है कि वो कीचड़ हमपर नहीं आना चाहिए। ध्यान नहीं रखेंगे तो कीचड़ के छींटे हमपर लग जायेंगे। योगी जीवन का मतलब ही है ध्यान रखना, ध्यान से जीना कि जो सबकुछ आसपास हो रहा है, उसका दाग हमारे पर नहीं होना चाहिए। उसके लिए हमें हर सिचुएशन से ऊपर रहना पड़ता है और जो भोगी जीवन है, वह नीचे रहता है, मतलब कि हमारी जो आत्मिक ऊर्जा का वायब्रेशन है वो लो-लेवल का रहता है। जबकि योगी जीवन जीने वाले का वायब्रेशन उच्च स्तर का होता है। जब हम उच्च स्तरीय वायब्रेशन की स्थिति में स्थित हैं और चेकिंग करते हैं तो हमारे में देवत्व का एक सफेद रंग का सर्कल बनता है जिसको हम 'औरा' कहते हैं, व्हाइट औरा। जिसे देवताओं या धर्म-स्थापकों के पीछे व्हाइट सर्कल के रूप में दिखाते हैं। मतलब यह एनर्जी कैसी है, सबके प्रति शुभ, सुख देने वाली, सुकून देने वाली होती है, प्युअर होती है। ये किसी भी तरह के स्वार्थ, अहंकार, क्रोध से रहित होती है। जबकि भोगी जीवन वाले के वायब्रेशन का औरा काला होता है। काला का मतलब उनसे निकलने वाले वायब्रेशन्स स्वार्थ व क्रोध से भरे, दुःख व अशांति फैलाने वाले होते हैं। जब ऐसे वायब्रेशन होते हैं तो मनुष्य सफरिंग में होता है।

इसका मतलब यह नहीं कि योगी जीवन वालों के सामने चुनौतियां नहीं होती, समस्याएं नहीं होती! उनके सामने भी अनेक बातें, मुश्किलातें, अलग-अलग वायब्रेशन के लोग, चुनौतियां, समस्याएं भी होंगी, लेकिन उन प्रॉब्लम्स को फेस करने का तरीका हाई एनर्जी के रूप में होगा। चलता तो वो भी इस कीचड़ के मध्य ही है लेकिन वो अपना ध्यान रखेगा और इन सब बातों से वो अनटच रहेगा, माना उसका प्रभाव न हो ये ध्यान रखेगा। अगर ध्यान नहीं रखेगा तो वो भी सफर करेगा। तो हमें योगी जीवन को मेंटेन करते हुए अपने को ऐसा ही रखना है जैसे कमल का फूल कीचड़ में रहकर भी उस कीचड़ की बूंद उसे स्पर्श नहीं करती है। कीचड़ में रहकर वो खिला हुआ रहता है। कीचड़ में छुपी हुई सुंदरता को लेकर वो अपने को खिलाता है। एनर्जी वहां से ही लेता है, लेकिन दूसरों को पॉज़िटिव एनर्जी अर्थात् खुशबू देता है। तो हम भी ऐसा कर सकते हैं ना! इन बातों से अपना बचाव करते हुए जी सकते हैं ना! ये संभव है! डिफिकल्ट से डिफिकल्ट कई सारे प्रॉब्लम्स को हम हल करते हैं लेकिन रोज़मर्रा की ज़िंदगी में छोटी-छोटी बातों में हम उसे नेगलेक्ट करते हैं जिससे बूंद-बूंद बनकर वैसा स्वभाव हमारा बनता जाता है और समय या परिस्थिति आने पर वो बैड एनर्जी का फोर्स हमें गलत कार्य करने को विवश करता है। इसलिए योगी जीवन वाला ध्यान रखने के कारण सांसारिक कीचड़ में रहते भी अपने को सेफ रखते हुए आगे बढ़ता है और दूसरों को भी अपने कृतित्व से सुख देता है और हाई एनर्जी में जीता है। बात सिर्फ ये है कि अपना ध्यान रखना कि कहीं काले कीचड़ का दाग मुझपर न लगे। ये तो कर सकते हैं ना!

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्त्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है।

अपना काम है सबको आत्मिक दान देना

बाबा कहते बच्चे, अपने स्वभाव को शीतल बनाओ। बहुत-बहुत नम्रचित्त और मीठे बनो। जब कोई फोर्स से कुछ कहता है तो उस समय उसकी मान लो। आप शीतल बन जाओ। अगर उस बात को लेकर दुश्मनी हो जाती तो नुकसान होता है इसलिए बाद में आपस में मिलकर मीठी धारणा की रूह रिहान करो, डिबेट नहीं करो। आपकी नम्रता का प्रभाव दूसरे पर ज़रूर पड़ेगा। एक की चर्चा दूसरे से नहीं करो। निर्माण बनना माना समा लेना। जब कोई बात आपस में नहीं बनती तो उसको छोड़कर स्व चिन्तन में रहो। झगड़े में पड़कर ज्ञान को नहीं छोड़ो।

हमें कुमार-कुमारियों का बहुत फिकरात रहता। हमारे ईश्वरीय विश्व विद्यालय का फाउन्डेशन है ईश्वरीय मर्यादा। दुनिया में मर्यादा नहीं, हमारी है टॉप मर्यादा। अगर हम किसी पर फेथ रखते हैं तो फेथ पर भी माया पानी डाल देती है। ऐसे अनेक अनुभव देखे हैं। इसलिए हम कन्ट्रोल करते- कुमार-कुमारियां मर्यादा में रहो। एक की गलती से सारे ब्राह्मणों को चोट लग जाती। एक के कारण हमें सबको बांधना पड़ता। किसी के कैरेक्टर पर दाग लगे ये मेरे से सुना नहीं जाता। शॉक लगता। कोई मेरे कैरेक्टर पर आँच डाले यह मेरे जीवन के लिए बहुत बड़ा दाग है। परन्तु किसी का क्वेश्चन क्यों उठा- क्योंकि हल्के होकर चले। ईश्वरीय मर्यादा हमारे जीवन का ऑर्डर है। बाकी कोई ऑर्डर नहीं। इसमें जितना अपनी रूहानियत में मस्त रहो, मेरा एक बाबा- उसी मस्ती में रहो, यह कंगन बहुत स्ट्रिक बंधा हुआ चाहिए। मैं जब यह बात बोलती तो समझते यह मार्ग तो बड़ा कठिन है। फिर बुद्धि जाती गन्धर्वी विवाह में। लेकिन जिन्होंने किया वह भी आँसू बहा रहे हैं। रो रहे हैं। इसलिए कभी भी यह संकल्प नहीं आवे। ऐसे नहीं कम्पेनियन चाहिए। मरना तो पूरा मरना। जीने का नहीं सोचो। हमें बाबा की गोदी में जीना है। दुनिया में हम मर गये। खाने का, पहनने का, नींद का सब ऐश चला गया। हम सब त्याग चुके। त्याग माना त्याग।

अभी हमें रूहानियत की आत्मिक शक्ति का दान देना है। जितना दाता बनो उतना पुण्यात्मा बनेंगे। मुझे नयनों से भी पुण्य करना है। अपनी रूहानियत की शक्ति का भी पुण्य देना है। मुझे देना सीखना है, मैं यह न सोचूँ कि यह मुझे दे। मैं दाता हूँ। जितना मैं दूंगी उतना मेरा महत्त्व है। एक-एक को रूहानियत देना, शीतलता देना, यह देना ही मेरी महानता है। ऐसे नहीं कि मैं इसे इतना स्नेह देती फिर भी यह मेरी ग्लानि करता। मुझे कोशिश करनी है एक भी कांटा न बने, अपना काम है सबको आत्मिक दान देना। दान देने में विघ्न तो अनेक आयेंगे क्योंकि दान लेने वाला कोई कैसा है, कोई कैसा। मैं हमेशा समझती- हर एक मेरे मास्टर हैं, मैं हर एक से सीखती हूँ।

अपने दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं रखो। झगड़े का कारण है एक-दो से नफरत। जड़ होती नफरत, बन जाता परचिन्तन, हो जाता दुश्मन। पहले होगी ईर्ष्या, वह पैदा करेगी नफरत, फिर परचिन्तन चलेगा, जिसका परचिन्तन करते वह दुश्मन बन जाता। एक बोल जीवन भर के लिए दुश्मन बना देता। एक ऐसा शब्द भी बोला जो किसी के हार्ट पर लग गया तो वह ज़िन्दगी भर दुश्मन बना देता। मैं ऐसा क्यों करूँ?

सच्चाई का बल बाबा को पकड़के रखता

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बात है सम्पूर्ण पवित्रता की, मैं मुख से कुछ नहीं कहूँ, पर वो सामने आये तो ओम शान्ति भी न कहूँ। अरे मुस्कुरा के ओम शान्ति करो ना, क्या मैं इतना बिज़ी हूँ! अगर मेरी दृष्टि ऐसी है तो क्या मैं आत्मा शुद्ध आत्मा की लाइन में हूँ? मैं अपनी बात देखूं, बाकी दूसरा कहाँ तक शुद्ध-अशुद्ध है, ऐसे नहीं। गंगा कभी यह नहीं कहती है, ये पापी है। पापी का काम है उसमें टुबकी लगा के पावन बनना। बाबा ने कहा है तुम मेरे मस्तक से निकली हुई गंगा हो। तुम मेरे माथे की लाज़ रखना। मेरे दिल में जो होगा, दिमाग ऐसा ही चलेगा। दिमाग में होगा तो दिल में अन्दर से वही फीलिंग होगी। तो आत्मा अन्दर से अपने दिमाग और दिल को देखे।

हम साउण्ड में आते साइलेन्स में रहें। इससे सम्पूर्ण पवित्रता क्या है, अपने आप खुद को अनुभव होगा। सम्पूर्णता है ही निर्विकारीपन की। सोलह कला सम्पूर्ण, सर्वगुण सम्पन्न, फिर सम्पूर्ण निर्विकारी। मेरे में कोई भी विकार का अंश न रहे। साइलेन्स में रहकर आवाज़ में आये, आवाज़ में आते संकल्प में थोड़ा भी अशुद्धि अशं मात्र भी न हो।

जो बात मेरे करने योग्य है वो तो मेरे को करनी पड़ेगी। फिर हिम्मत बच्चे की मदद बाप की, नियत साफ मुराद हासिल, सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। अगर मैं कोई भी बात में हिम्मत नहीं रखती हूँ तो जैसे बाबा का जो कॉन्ट्रेक्ट साइन किया हुआ है हिम्मत बच्चे की मदद बाप की वो मैं कैन्सिल कर रही हूँ। बाबा ने मेरे में आशायें रखी हैं, उम्मीदें रखी हैं, कहाँ से उठा के कहाँ बिठाया है। अभी अपने को नालायक बना के, यह ख्याल करके हिम्मत को छोड़ेंगे तो क्या हाल होगा! तो हम लोगों को इतना एलर्ट, एक्यूरेट रहना है। कई बाबा के बच्चों ने मदद के आधार से हिम्मत नहीं छोड़ी है। पर हिम्मत और मदद के बीच में सच्चाई चाहिए। हिम्मत कभी अकेला काम नहीं कर सकती। सच्चाई का बल बाबा को पकड़के रखता है। बाबा मुफ्त में नहीं देता है, पहले सच्चाई को टेस्ट करता है। सच्चाई के आधार से भले कितने भी उतराव-चढ़ाव आयेंगे, दूसरा कोई मदद नहीं करेगा। स्वयं अपनी आत्म-अभिमानी सीट पर रहें तो बाबा मदद करता है, भले कोई न पूछे। सच्ची दिल है तो साहेब राज़ी है, परिवार मेरा है। कोई भी परिवार में ऐसा नहीं हो सकता है, जो मेरे को प्यार न करे। पर मेरे अन्दर प्यार नहीं है, यह प्यार का परवाह बल देता है। ज्ञान भी तभी अच्छा लगा है जब भगवान के लिए प्यार है, स्वयं के लिए प्यार है। अगर मेरे में हार्ट ही नहीं है तो हेड क्या काम करेगा! हार्ट, हेड, हैण्ड इसपर आधार है। जैसा दिल, दिमाग है, हाथ वैसा ही काम करेगा। अगर दिल दिलवाला के साथ है तो दिल कभी भारी नहीं होगा। दिल में दुःख आयेगा नहीं। दुःख देने का भी ख्याल नहीं आयेगा। दुःख देने का ख्याल आना भी अपवित्रता है। पवित्रता में सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं है। दृष्टि-वृत्ति एक बारी भी खराब हुई, उसमें चंचलता है तो वह हमें पवित्र बनने नहीं देगी। दृष्टि में हमारी रूहानियत, आत्मिक दृष्टि हो। एक बाबा के बच्चे हैं, किसके भी स्वभाव-संस्कार वश मेरी दृष्टि में उसके लिए दुविधा आई या दुःख महसूस हुआ। भले उसने मुझे धोखा दिया, उसका मुझे दुःख हुआ, मेरी दृष्टि-वृत्ति बदल गयी। तो यह भी मेरी अपवित्रता हो गयी क्योंकि दुःख, धोखेबाजी से बुद्धि दुविधा में आ जाती है। विश्वास अपने से या औरों से छूट जाता है।

भावना मेरी सदा शुद्ध श्रेष्ठ हो, विश्वास अटल हो। अच्छा ही होगा, हुआ ही पड़ा है। जो मीठे बाबा ने कहा, बच्ची हो जायेगा। अन्दर से और कोई आवाज़ आये ही नहीं। कैसे होगा? मुख के लड्डू थोड़े ही खाना है। अन्दर विश्वास का जो आवाज़ है, उसको मैं क्यों छोड़ूं। ड्रामा में हुआ पड़ा है, कराने वाला बाबा बैठा है। मुझे अपनी भावना को सच्चा रखना, मेरा काम है। जो होगा मैं राज़ी हूँ।

निश्चय में कभी खलल न पड़े, संशय न आये, स्वयं में, चाहे बाप में, चाहे ड्रामा में। ज़रा-सा भी संशय आया, तो आत्मा का जो भाग्य है, निश्चय के बल से विजय पाये, वह नहीं हो सकती। पूरे विश्व में सेवायें हो रही हैं, कई आत्मा नहीं कर रही है। परन्तु आत्मा का भाग्य है सिर्फ निश्चय रखा। भाग्य विधाता ने उसको निश्चय से निमित्त बना लिया। निश्चय का बल है सेवा का फल है। हमने क्या किया! सिर्फ पवित्रता हमारे संकल्प, वाणी, कर्म और सम्बन्ध में हो।

कहने से ज़्यादा करके दिखाओ

जैसे हर वर्ष मधुबन आते जाते रहते हैं, वैसे माया आती रहती है, कभी हार खाते, कभी विजय होती है। ऐसे अभी नहीं करना, जैसे दत्तात्रेय ने बहुत गुरू किये यानी उनसे गुण उठाया, ऐसे माया से गुण उठाके मायाजीत बनो। बाबा, हम सारा वर्ष मायाजीत रहेंगे, ऐसी प्रतिज्ञा मधुबन में करके जाओ तो सदा विजयी रहेंगे। कहने से ज़्यादा करके दिखाने से बाबा खुश होगा, शक्ति भी देगा। रोज़ अमृतवेले बाबा से मिलन मनाके जो दृढ़ संकल्प किया है, वो याद करते कर्म योगी बन कर्मक्षेत्र में जाओ। फिर बीच-बीच में चेक भी

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

करते रहो कि जो स्वमान मैंने सुबह बाबा के सामने लिया था वो स्मृति में है? अगर स्वमान भूल गया है तो स्मृति में फिर से लाओ। अपने को चेक करना है कि मुझे बाबा याद है या नहीं? स्वमान याद है या नहीं? क्योंकि बाबा को याद करके अपने पापों को भस्म करने के लिए बाबा के ब्राह्मण बच्चे बने हैं, ना कि दूसरों को देखने के लिए। तो हम बी.के बने ही हैं कुछ परिवर्तन करने के लिए। बाबा कहते तुम बच्चे अपने को ठीक करेंगे तो योग में रहकर अन्य लोगों को भी शान्ति की शक्ति दे सकेंगे। तो जो सोचा है वो करना ही है। देखेंगे, सोचेंगे, करना तो है, कर तो रहा हूँ... यह भाषा यूज़ न करके, करना ही है ऐसे कहो। बाबा ने हम बच्चों में जो आश रखी है वो पूर्ण करना ही है, इसमें कांध हिलाओ। एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये, अगर व्यर्थ जायेगा तो अच्छा नहीं है। यहाँ आये हैं रिफ्रेश होने के लिए, भले कर्म भी करेंगे लेकिन कर्मयोगी होके करना है। सेकण्ड और श्वास कुछ भी व्यर्थ न जाये इतना अटेन्शन रखो तो समर्थ रहेंगे। यहाँ का यह अभ्यास वहाँ बहुत काम आयेगा।